Printed at the
"Chitragupta Press."
BY RAMSAHAI VARMA
147 Cotton Street, Calcutta.

निक्षेपा ४ पन्ना, ५-६६ से ७५

॥ श्रीगौतमाय नमः ॥

॥ दोहा ॥

केवल ज्ञानीको सदा, वन्दु वे कर जोड़ ।
गुरु मुखसें धारण करो,अपनी जिदको छोड़ ॥
जिन वचन तहमेव सत्य,समभाव नहीं तांण ।
जतनासें वाचो, सही, येही प्रभुकी वांण ॥

सूचना ।

यह पुस्तक यत्नसें रखवे । आदिसे अन्त तक वांचे ।

उघाड़े मुख तथा चिरागके चानणें नहीं वांचे: पद. अक्षर. ओछो. अधिको. आगो. पाछो. तथा कानो मात्र. मिंडी. ह्रस्व. दीर्घ. अशुद्ध. टूटी भाषामें लिख्यो हुयो विद्वान कृपाकर शुधार लेवें संग्रह-कर्ताकी यही नम्र विनती है ।

॥ शुद्धि-पत्र ॥

पृष्ठ	पंक्ती	अशुद्ध	शुद्ध
१३४	११	आधार	आदार
१३६	१	परमलाओं	परमालाओं
१३८	२	आधार	आदार
१५१	१२	गांवरो	गावरो
१५८	१	नम्न	निम्न
१६२	१२	रुद्राध्यान	रुद्रध्यान
१६६	५	नवनु	नवमुं
१६७	८	पल्योपमरे असंख्याता भाग अधिक	पल्योपमरे असंख्या-तमें भाग अधिक
१७९	७	वज्र	वज्र

नोट:—हेडिंग और नोट के लाईन छोड़ कर पंक्ति (ओली) देखो।

त्युं पांचो पद समरतां,
मिथ्या तिमिर पुलाय ॥ ६ ॥
शुद्ध उपदेशक शुद्ध गुरु,
सेव्यां उपजे ज्ञान ॥
पत्थरकी प्रतिमा करे,
गुरु कारीगर जान ॥ ७ ॥
ज्युं साधु संगति थकी,
शुद्ध आत्म ज्ञान ॥
अनुभव दीपक हाथमें,
निज घर होय उद्योत ॥ ८ ॥
भारी करमी जीव को,
धर्म वचन न सुहाय ॥
ज्युं ज्वर व्यापित देहमें,
अरुची अन्नकी थाय ॥ ९ ॥
तिम मिथ्यात्व ज्वर जोर ने,
न हुवे अनुभव ज्ञान ॥
विषय कषाय मिथ्यात थी
होय सुमन को हान ॥ १० ॥

जेहनी भय थिति पट गई,
तेहने छे उपदेश ॥
भारी करमी जीव को,
लगे नहीं लव लेश ॥ ११ ॥

॥ अथ गाथा ॥

नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा ।
एय मग्गमणुपत्ता जीवा गच्छंति सुगई ॥ १ ॥

॥ व्याख्या ॥

नाण कहिए सम्यक ज्ञान ।१। दं० दर्शन कहिए तत्व श्रद्धा, शुद्ध सम्यक सद्दहणा ॥ २ ॥ च० वली चारित्र कहिए आश्रव रूंधवा ।३। त० तप कहिए इच्छानि रोधन ।४। ए० ४ मार्ग ने विषे मण अ० प्रनुप्राप्त कहिए केडे । पट्टस्या वली । जी० । जीव गच्छंति जाइ सुग इ० भला गति ते मोक्ष गमण प्रत इत्यर्थः

ते मति ग्यान। तेहना २८ भेद प्रभवप्रत्यय तथा कर्मनें चयोपसमें करी मर्यादा द्रव्य चेत्र काल भावना थाय, ते मर्याद वरती अवधी ज्ञान। तेहना ६ भेद मनपर्याय जाणें ते मन पर्यव ज्ञांन ॥ अढ़ी द्वीप वासी सन्नीपंचेंद्री पर्यातना मनोगत भाव जाणें। ते मन पर्यव ज्ञांन, तेहना २ भेद। विमुलरुजु सर्वजाणें, ते केवल ज्ञान। तेहना १ भेद । इम ५ ज्ञानना इकावन भेद कह्या नंदी सूत्रें। सविस्तर पणें घणा भेद पिण कह्या।

॥ यतः ॥

ज्ञानं पंच विधं प्रोक्तं श्रुत ज्ञानं विसेपन जेन श्रवणमात्रेण, प्राप्यतेपरमंपदं ।१। मति ज्ञान १ श्रुत ज्ञान २ ।अवध ३। मनपर्याव ४।

केवल ५ । संवेदु । श्रुतज्ञानविशेषत ।१। ज्ञान ५ मांहि श्रुत ज्ञान मुख्य छै विशेष छै ।

शिष्य पूछै श्रुतज्ञान विशेष किम छ्य पूछां गुरु उत्तर कहै छै ।

सांप्रदाय श्रुतज्ञानद्वं उपदेश गमुयं न थहा । इत्यादि श्रुतज्ञानमें थाय ॥ [illegible] [illegible] श्रुतज्ञानछै छै ॥ [illegible] [illegible] नाही छै ॥ [illegible] [illegible] नामाइ [illegible] [illegible] [illegible] छै । [illegible] ज्ञान प्रमुख [illegible] ज्ञानदा. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ज्ञान [illegible]

गच्छति तिण वास्ते श्रुत ज्ञान नो उद्यम अवश्य करवो श्रुत ज्ञान नो संयोग जीवनें पामवो अत्यंत दुर्लभ छे।

॥ उतराध्ययन त्रीजे अध्यय नें गाथा कही॥

माणुस्संविगाहंलद्धुं । सुइधम्मस्ससदुल्लहा । जंसुच्चापडिवज्जंति । तवखंतिमहिंसयं ॥१॥

इम जाणी अहो भव्य जीव श्रुत ज्ञान गुणवानों तथा भणवानों उद्यम अवश्य कीजे श्रुत ज्ञान नो संयोग पामीने पूर्वे पुंडरीकादि गणधर घणा जीव तरया तथा वर्त्तमान काले महाविदेह में श्रीमंधर तीर्थंकरनी वाणी सांभल ने घणा जीव तरे छे अनागत काले श्रीपदमनाभ तीर्थंकरनी वाणी दृढपइन्न प्रमुख सांभली घणा जीव तरसी तरसे। आज पिण जे श्रुत ज्ञान ने भणसी सांभलसी अंगीकारे श्रद्धा रुचि

प्रतीत करसे ते सूलभ वोधि हुसे परंपरायें मुक्ती पद पामसे ।

॥ उत्तराध्ययन गाथा ३६ मां ॥

जिणवयणे अणूरत्ता । जिणवयणं जेकरंति भावेण अमलाअसंकिलठा । ते हुंति परित्त संसारी ॥ १ ॥

इत्यादि विस्तार श्रुत ज्ञान नो मुख्यता पणो वतायो ते श्रुत ज्ञान सम्यग दृष्टिने होवे छे मिथ्यात्वी ने श्रुत अज्ञान होवे छे ते कारणों सम्यक्त प्रगट थावानो निमत्त कारण श्रुतज्ञान सुत्र सिद्धांतनो सांभलवो छे ते सम्यक्त नो निमत्त कारण जाणिवो जे भणी श्रुत ज्ञान नो विचार भाषा रूप संक्षेप पणे कहिए छे तिहां प्रथम तो ज्ञान जीवने छे ते जीव किण प्रकारे भ्रमण करे छे ने कहेछे जीवाभिगम सूत्र नें अनुसारे नित्य भ्रमण दिखावे छे जीव अनादियो छे तिहां प्रथम घर जीव नो निगोद छे जे निगोद

मांहि परिभ्रमण करतां अनंत काल चक्र वीत-
जाय जद पृथवी (१) अप (२) तेउ (३) वायु
(४) वनास्पती प्रत्येक (५) वेंद्री (६) तेंद्री (७)
चोरिंद्री (८) पंचेंद्री (९) तिर्यंच (१०) नारकी
(११) देवता (१२) मनुष्य (१३) इत्यादि ८४
लष्य जोनमें ४ गतिमें ८ कर्म ने वसी पड्यो
नाना रुप धरतो जन्म जरा रोग सोग विजोग
मरण इत्यादि दुःखे पीड्यो परिभ्रमण करे छे
किवारे नरक वेदना किवारे परवस्यनी वेदना
किवारे गर्भावासमें किवारे भृख किवारे तृषा
किवारे छेदण भेदण वंधण इत्यादि दुख अनु-
भवतां इम भ्रमण करता अनंत काल गमायो
अनंत पुदगल परावर्त्तन किधा निज गुण भूल्यो
पर गुण गह्यो आप आपरो भेद ना पिछाण्यो
जिम मद्य पान किधां व्यामोहग्रव्यलना मूढ़ता
उपजे तिम अनादि मिथ्यात्व पणे गहिलवत
स्वगुण भुल्यो निज अवस्था थी विकल थइ रयो

अपूर्व कहतां पहिलां कदेन आव्यो एहवो जे परिणाम ते अपूर्व करण ए बीजो करण सम्यक्त योग्य जीव ने थाय।

॥ हिवे तीजो अनिवृत्ति करण ते कहे छे ॥

जे मुहुर्त्त रूप स्थिती मिथ्यात्व नी रहि हुंती ते खपावे अने निर्मल शुद्ध सम्यक्त पामें मिथ्यात्व नो उदय मिट्यो तव जीवउपसम सम्यक्त पावे ते अनंतानुबंधी की चोकड़ी [४] मिथ्यात्व मोहनी [५] मिश्र मोहनी [६] सम्यक्त मोहनी [७] ए सात प्रकृत्ति उपसमावे तो उपसम सम्यक्त कहीए अने एहीज सात प्रकृती खपावे तो क्षायक सम्यक्त कहीए अने ६ प्रकृति नो अण उदय थाय जे उदह आवेसो खपावे और सत्ता में है सो उपसमावे सम्यक्त मोहनी नो उदय हे ते क्षयोपसम सम्यक्त कहीए एहवा जे सम्यक्त्वंत परिणाम ते अनिवृत करण

सेवे नहीं आगम सप्त नय च्यार प्रमाण च्यार निक्षेपा द्रव्य क्षेत्र काल भाव सामान्य (१) विशेष (२) ए निश्चे [१] विवहार [२] एवं सर्व पूर्वोक्त वचन शुद्ध आगम परूपे तेहने विवहार सम्यक्त कहीए ए पूर्वोक्त सम्यक्तो नो विवहार छे ए व्यवहार सम्यक्त अभव्यने पिण संभवे छे ए विवहार आराध्यां विनां उपरली ग्रेवे किम जावे ते व्यवहार सम्यक्त कहीये ए पुन्यनो कारण छे तथा धर्म प्रगट करवानो कारण छे एहवी रुचि ज्ञान विना घणा जीवा ने उपजे एहवो सम्यक्तनो व्यवहार जीवने अनंतीवार पाम्यो छे नवमां पूर्व नी त्रीजी वत्थु लगी अभव्यी जीव भणे छे अने परूपे छे पिण अंतरंग आत्म स्वभाव ना ओलखी शुद्ध सद्दहणा पिण ना पावे ते व्यवहार सम्यक्त कहीजे।

१

॥ अत्र हेतु दृष्टांत कहे ॥

जिम राजा वक्र सिक्षित अश्वारूढ थइने भीलाना वन ने विषे जाय पड्यो भील पकडीने आपणे घरे लेई बेठायो तो राजा आपणे मंदिर तथा चित्रसभा मृगांक्षी इत्यादि वस्त्र ने भूले नहीं तिम जीव कर्म रूप भीलाने वस पड्यो पण निज घर ज्ञानादि निज परणित आत्माने भवने (परणित आत्म भवने) भूले नहीं ए सम्यक्त होय तेहने ज्ञान होय।

नादंसणिस्सनाणं सम्यक्त नो ज्ञानवंतने होय अज्ञानीने सम्यक्त ना होय ते भणि ज्ञान नो स्वरूप ओलखावे छे ते ज्ञान दोय प्रकार छे एक व्यवहार ज्ञान बीजो निश्चे ज्ञान तिहां प्रथम व्यवहार ज्ञान कहे छे जिन (जैन) धर्मना शास्त्र जैन आगम नो मूलगो अनुयोग कहीए विस्तार व्याख्यान ने अनुयोग नाम. धर्मकथानुयोग (१) गणितानुयोग (२) चरणा-

कारण (२) मोक्ष करणहार (३) मोक्ष रूप (४) सच्चिदानंद एहवो. जे अनुभाव रूप, जे आत्मा तेहीज निश्चै ज्ञान । ज्ञान आत्मामें भिन्न नहीं आया से दिखाया. दिखावासे आया इति वचनात् तेहने मूल मिथ्यात्व मोहनी उदय नहीं आत्मा नो उजल पणो ते ज्ञान, जिम सूर्य्य विमान नो निज गुण तेज पणो अभ्र पटल थी दयवो निस्तेज थयो अभ्र पटल दुर हुयो जाज्वलमान तेज प्रगट्यो, जिम ज्ञाना वरणी रूप अभ्र पटल दुर हुवां मिथ्यात्व मोहिनी खपावां निश्चै ज्ञान कहीजे. निश्चै ज्ञान निश्चै सम्यक्दर्शन ने हुवे व्यवहार ज्ञान व्यवहार सम्यक्दर्शन ने होवे इति ज्ञान कह्यो ।

हिवे ज्ञान नो विस्तार कहे छे उत्तराध्ययन सूत्रमें २८ मां अध्ययनमें कह्यो ॥

नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा

चरित्तं नाणदिठ्ठाइ सम्मत्तादिमूजइ ॥ १ ॥
इति वचनात् ज्ञानने कहिए, पदार्थ ना जाण
एव इरण कहिए, पदार्थ सर्व भाखा एव ही
पदार्थ छे ।

॥ उत्तराध्ययन २८ मांध्ययनमें गाथा ॥

धम्मो अहम्मो आगासं । कालो पुग्गलजंतवो ।
एस लोगो त्ति पन्नत्तो । जिणेहिं वरदंसिहिं ॥७॥ इम
कह्या धर्मास्तिकाय (१) अधर्मास्तिकाय (२)
आकाशास्तिकाय ३ काल ४ पुद्गलास्ति
काय ५ जीवास्तिकाय ६ एवं द्रव्य लोक
कह्या ए षट् द्रव्य जो कह्या छे ते षट् द्रव्यने
जिन वीतराग सर्वज्ञ ज्ञान करी द्रव्यने
गुण पर्याय करी ताना स्वरूप ने स्वगुण स्वप-
र्याय आचरण करीने निश्चे जाने ॥ उत्तराध्ययन
२८ माध्ययन में कह्या ॥ एयं पंचविहं नाणं
द्व्वाणाय गुणाणाय पज्जवाणाय सव्वेसिं नाणं ·
नाणीहिं देसियं ॥५॥ अथ ए मतिज्ञान आदि

पांच ज्ञाने करी द्रव्य गुण पर्याय सर्व द्रव्यने जाणे ते ज्ञानी कहीए ।

सुत्रकी गाथा अकालमें भणी होय अकालमें लीखी होय छपाइ होय ज्ञानादी की असातना कीनी होय अक्षर पद आगो पाछो ओछो अधिको अशुद्ध लीख्यो होय जांणते अजांणते दोष लाग्यो होय तस्समिच्छामि दुक्कडं ।

सेवं भंते सेवं भंते

॥ इति ॥

ॐ

॥ अहिंसा परमो धर्म ॥

अथ श्री नय प्रमाणको थोकड़ो

श्री अनुयोगद्वार सूत्र में नय निक्षेपा को थोकड़ो चाल्यो उनका [illegible] द्वार करके लिखूं

॥ नाम ॥

(१) नय [illegible] निक्षेपा ३ द्रव्यगुण प्रयाय

भिरूढ़ नय (७) एवंभूत नय।

नैगमनय किसको कहते हैं ?

दो पदार्थोंमेंसे एकको गौण और दूसरेको प्रधान करके भेद अथवा अभेदको विषय करनेवाला ज्ञान नैगम नय है तथा पदार्थके संकल्पको ग्रहण करनेवाला ज्ञान नैगम नय है जैसे--कोई आदमी रसोइमें चावल लेकर चुनता था, किसीने इससे पूछा कि क्या कर रहे हो, तब उसने कहा के भात बना रहा हूं, यहां चावल और भातमें अभेद विविक्षा है, अथवा चावलों में भातका संकल्प है।

संग्रह नय किसको कहते हैं ?

अपनी जातीका विरोध नहीं करके अनेक विषयोंका एक पनेसे जो ग्रहण करे, उसको संग्रह नय कहते हैं, जैसे--जीवके कहनेसे चारों गतिके सब जीवोंका ग्रहण होता है।

पर्यार्थिक नय किसको कहते हैं ?

जो विशेषको (गुण अथवा पर्यायको) विषय करें ।

द्रव्यार्थिक नय और पर्यार्थिक नयके भेद ।

इसमें तर्कवादी श्रीमान् सिद्धसेन दिवाकर तीन द्रव्यार्थिक नय मानते हैं, जिसका नाम--नेगम (१) संग्रह (२) व्यवहार (३) ए तीन मानते हैं. और सिद्धांत वादी श्रीजिनभद्र गणि खमासमण द्रव्यार्थिक नय च्यार मानते हैं, जिसका नाम--नेगम (१) संग्रह (२) व्यवहार (३) रुजुसुत्र (४) ए च्यार मानते हैं. अपेक्षासें दोनु महापुरुषोंका मानणा सत्य है। कारण रुजुसुत्र नय प्रणाम ग्राही है और वर्तमान काल और भाव निक्षेप माननेवाला है। इस-लिये पर्यार्थिक नय मानी गई है. और दूसरी

अपेचासें ऋजुसुत्र नय शुद्ध उपयोग रहित होनेसे द्रव्यार्थिक नय मानी गई है तत्व केवलि गम्य ।

॥ व्यवहार नय कोई च्यार कहते हैं जैसे—नैगम नय, संग्रह नय, व्यवहार नय, ऋजुसुत्र नय, ए ४, कोई तीन कहते हैं जैसे—नैगम नय (१) संग्रह नय (२) व्यवहार नय (३) ए तीन ए. अपेक्षा वचन है अपनो गरजमें ना आर्णो शका ना लावे तत्व केवलि गम्य नमेव मच्चम ।

॥८॥ उपादान निमित्त ।

उपादान शिष्यको निमित्त गुरुको मिल्यो जब ज्ञानकी प्राप्ति हुई ।

॥६॥ च्यार प्रमाण ।

(१) प्रत्यक्ष प्रमाण (२) आगम प्रमाण (३) अनुमान प्रमाण (४) औपमा प्रमाण ।

प्रमाण ने कोने कहीए, सम्यक् ज्ञान—ते संशय, विपरीत अने अनध्यवसाय ए त्रण दोष रहित होय तेहने प्रमाण कहीए, संशय

कहेनां छीप (सीप) जमीन उपर पड़ी छे ते निश्चय कर्या विना कहे के ते चांदी देखाय छे अथवा छीप छे तेनो निर्णय न करे ते. विपरीत केहतां एम बोलेके छीप तो समुद्रमां होय. अहां क्यांथी होय ? माटे चांदी छे. एम नक्की करी बेसे ते।

अनाध्यवसाय केहतां निर्णय कर्या विना बोले के अन्य जन थी आपणे शुं काम छे. शुं मतलब छे ए त्रण दोष रहित होय तेने सम्यक ज्ञान अथवा प्रमाण नय कहीए।

एवं प्रमाण नयना बे भेद---प्रत्यक्ष अने परोक्ष।

प्रत्यक्ष-प्रति कहेतां सामे अक्ष कहेतां आंख आत्मानो सामे आत्मा सिवाय बीजानी सहायता विना वस्तुना स्वरूपने जाणे तेने प्रत्यक्ष प्रमाण कहीए. तेना बे भेद--देशथकी अने सर्वथकी।

देशथकी ते अवधि ज्ञान. मनः पर्यव ज्ञान।

उत्पन्न, नाण, दंसण धरा, अरहा जीन केवलीके जेनी अर्थरुप परुपेली द्वादशांगी वाणी तथा गणधर महाराजनी गुथेली पाठरुप द्वादशांगी वाणी जेना त्रण भेद--अत्तागमे, अणंतरागमे, परमपरागमे ।

अत्तागमे कहेता तीर्थंकर महाराजनी अर्थरूप वाणी ते अने अणंतरागमे कहेतां गणधर महाराज बोले ते ।

परमपरागमे कहेतां बीजा शिष्य बोले ते ।

वली अत्तागमे कहेतां बीजा शिष्य बोले ते।

परंपरागमे कहेतां आगल बोले ते ।

हवे उपमा प्रमाणना त्रन भेद, कींचित, प्राय, अन्योन्यः ।

किंचित ते कोने कहीए. उदाहरण--जेमके सरसवना दाणा जेवो मेरू पर्वतः द्वारका देवलोक जेवी वीगेरे वगेर ।

बीजुं प्रायः ते कोने कहीए. गाय रोझ सरखी ।

भावि नैगम है, और वर्तमान नैगम यह है कि जो वस्तु निष्पन्न हुई वा नहीं हुई उसको वर्तमान नैगम अपेक्षा इस प्रकारसे कहना जैसे के तंडुल पक्ते हैं अर्थात् औदनः पच्यते, चावल पक रहे हैं सो इसका नाम वर्तमान नैगम नय है।

(२) संग्रह नय भी दो प्रकारसे वर्णन किया गया है जैसे कि सामान्य संग्रह (१) विशेष संग्रह नय (२) अपितु सामान्य संग्रह इस प्रकारसे है जैसे कि सर्व द्रव्य परस्पर अविरोधी भावमें हे अर्थात् सर्व द्रव्योंका परस्पर विरोध भाव नहीं है. अपितु विशेष संग्रह में यह विशेष है कि जैसे कि जीव द्रव्य परस्पर अविरोधी भावमें है क्योंकि जीव द्रव्यमें उपयोग लक्षण वा चेतन-शक्ति एक सामान्य ही है सो सामान्य द्रव्योंमें से एक विशेष द्रव्यका वर्णन करना उसीका ही नाम संग्रह नय है।

(३) व्यवहार नय भी दो प्रकारसे ही कथन किया है, जैसे कि १ सामान्य संग्रह-रूप व्यवहार नय जैसे कि द्रव्य दो प्रकार का है यथा जीव द्रव्य (१) अजीव द्रव्य (२) अपित्रु २ विशेप संग्रह-रूप व्यवहार इस प्रकारसे है जैसे कि जीव-संसारी (१) और मोक्ष (२) क्योंकि संसारी आत्मा कर्म-संयुक्त है और मोक्ष आत्मा कर्मोंसे रहित है इसलिए ही उनके नाम अजर. अमर, सिद्ध, बुद्ध, पारंगत, परंपरागत. मुक्त इत्यादि है जीव द्रव्यके दोय भेद यह व्यवहार नयके मतसे ही है. इसी प्रकार अन्य द्रव्योंके भी जाण लेणं ।

(४) ऋजुसुत्र नय भी दो भेदसे कहा गया है. यथा जो समय समय पदार्थोंका नूतन पर्याय होता है और पूर्व पर्याय व्यवच्छेद हो जाता है उसीका ही नाम सुक्ष्म ऋजुसुत्र नय है. अपित्रु जो एक पर्याय आयु

में जिस वस्तुकी सता है, उसके गुण कार्य ठीक ठीक मानते वही समभिरूढ़ नय है।

(७) एवंभूत नयके मतमें जो पदार्थ शुद्ध गुण कर्म-स्वभावकी प्राप्त हो गये हैं उसको उसी प्रकारसे मानना उसीका ही नाम एवं-भूत नय है, जैसे कि इदंती इन्द्रः अर्थात् ऐश्वर्य करके जो युक्त है वही इन्द्र है यही एवंभूत नय है।

॥ पाठान्तर ॥

"सात नय स्वरूप"

॥१ नेगम॥

नेगम कहतां नदीकी धारा. प्रवाह सरीखो गम अने नेगम एक अंश मात्र. जे वस्तु नो गुण प्रगट हुवे. तेहने सम्पूर्ण पणे वस्तु ने मानें सो नेगम नय कहीजे. ते नेगम नय का ३ भेद. भूत नेगम (१) भविष्यत नेगम (२) वर्तमान नेगम (३) जो अतीत कालके विषे जो पदार्थ

हुवा, अरू वाही वर्तमानकी सीन्या कहणेसे भूत नेगमनय कहिए, जैसे कोइ दीवालीके दिन कहै आज श्री वीर्द्धमान स्वामी मोक्ष गया अैसो कहणो (१) हवे भविष्यत नेगम, आगामी कालके जो पदार्थ होणहार है ते वर्तमानमें कहणो, जैसे उतराध्ययन १६ में अध्यायनें, गृहवासी वसतां जुवराया दमीसरे अैसो कह्यो ते भविष्यत नेगम नय कहीजे (२) हवे वर्तमान नेगमनय, जे वस्तु करणी मांड़ी, किंचित् नीपजी, तिमकुं सम्पूर्ण पणें कहणी, जैसे चोको देता (लीपतां) देखो तथा रसाइकी सामग्री भेली करना देखी पूछ्यां सुं करे छ तब कह्यो रसोइ करुं छुं अैसा कहणो (३)।

॥ पाठान्तर ॥

नेगमनयना ३ भेद---गया कालनुं वर्तमान कालमां आरोपण---जेम तिर्थंकरादिक वर्णव, वर्तमान कालनुं वर्तमान कालमां

॥ २ संग्रह नय ॥

संग्रहनय वालो, सामान माने विशेष नहीं माने तीन कालरी वात माने, निक्षेपा ४ माने, संग्रह संग्रह वस्तुको ग्रहण करें, एक शब्दमें अनेक वस्तु ग्रहण करे जैसे वनको वन कहे वनमें वस्तु अनेक है (जैसे किसीने कहा के वनहे संग्रह नय वालो वनमें जीतनी वस्तु है उसकु एक वन शब्दमें ग्रहण करे) अथवा कोइ साहुकारने अनुचर याने दासको कहा दांतण लावो तव वह दांतण लाया, झारी, काच, कंघी, सुरमा, मिस्सी, पाग, रुमाल, पोशाक, अलंकार इत्यादिक अनेक वस्तु लाया।

संग्रह नयका दोय भेद है (१) सामान संग्रह, (२) विशेष संग्रह । हवे सामान संग्रह जो अजीव द्रव्य मांहे मांही अविरोध है ।

अचेतन गुण अपेक्षा, सामान्य गुण ६ द्रव्यमां है ।

अजीव द्रव्यमें असो कहणो--ते संग्रह सामान्य पणें कहीजे।

हवे विशेष संग्रह--जो परजातीका द्रव्य कुं छोडीकरी, स्वजाति स्वद्रव्यकों संग्रह करियें सो विशेष संग्रह कहीए।

॥ ३ व्यवहार नय ॥

व्यवहार नय वालो, समान्य सहित विशेप माने, तीनकालकी वात माने, निचेपा ४ माने, व्यवरो करे तेने व्यवहार कहिए जैसे--- व्यवहार में कोयल काली है निश्चयमें वर्ण पांच है।

व्यवहार में बगलो धोलो है, निश्चयमें वर्ण पांच है। व्यवहारमें सुवो हरो है निश्चय में वर्ण पांच है।

॥ ४ ऋजुसुत्र नय ॥

ऋजुसुत्र नय वालो, सामान नहीं

माने विशेष माने, वर्तमान काल री बात माने, निक्षेपो (१) भाव माने, पराइ वस्तुको आपणे निरर्थक पणे जाणे, जैसे---आकाशमें फुल (कुसुम) लागा तो कहे निरर्थक, जिसपर किसीने कहा सौ वर्ष पहले सोनेकी वृष्टि हुइ थी तो कहे निरर्थक, सौ वर्ष पीछे सोनेकी वृष्टि हुसी तो भी कहे निरर्थक. वर्तमान काल को मुख्य करके वस्तुको माने. वर्तमान परिणाम भावको ग्रहण करे ।

साहुकारकी बेटेकी बहुको दृष्टांत ।

जैसे कोई साहुकार अपने घरमें समायिक लेके बैठा था. उस वख्त अन्य पुरुषन आकर साहुकारकी बेटेकी बहुसे पुछा के बाई तेरा सुसरा कहां है तब वह बोली मेरा सुसराजी पसारीके यहां सूंठ मिरच खरीदने के लिए गये हैं. वो वहां जाकर साहुकारको तलाश किया परन्तु सेठजी वहां नहीं मिले, तब वह

वापिस आकर साहुकारकी वेटेकी वहुसे पुछा के सेठजी वहां तो नहीं हैं। वताव कहां गये हैं; तव उसने कहा के मेरा सुसराजी मोचीके यहां जूता खरीदनेके लिए गये हैं तव वह पुरुष वहां जाकर भी तलाश किया तो भी सेठजी नहीं मिले तव वह पीछा आकर बोला वाइ सेठजी तो वहां भी नहीं है, इतनेमें सेठजीकी समायिक आगइ और सेठजी समायिक पाड़-करके उस मनुष्यसे वात चीत करके उसको तो सीखदी और आप फिर अपनी वेटेकी वहुसे कहा के हे वहु तू जानती थी के मैं समायिक लेकर घरमें वैठा था, फेर विचारा उस आदमी को नाहक तकलीफ क्यों दी, तव वहुने कहा के आपका मन दोनों ठिकाने गया के नहीं? तव सेठजी वोले हां गया था, ऐसे चौथी ऋजुसुत्र नय वालो, वर्तमान कालमें जैसा परिणाम (परणाम) हुवे वैसीही वात माने ।

हुवे को पुरेन्द्र माने ; और देवता की सभामें बैठ कर देवता का न्याय (इन्साफ) करते वख्त देवेन्द्र माने ; और देवियोंकी सभामें नृत्यादि विलास करते हुवेको शचीपति माने ।

॥ ७ एवं भूत नय ॥

एवं भूत नय----सामान्य नहीं माने, विशेष माने वर्तमान काल की बात माने निक्षेपो एक भाव माने. सरीखा शब्दको उपयोग सहित जुदा जुदा अर्थ ग्रहण करे जैसे- शक्रेन्द्र शक्र आशन पर बैठा हुवा अपनी शक्तिसे जबरदस्ती उपयोग से बैरी देवता को आण मनावे उस वख्त शक्रेन्द्र माने : पुरेन्द्र बैरी देवताके ऊपर हाथमें वज्र लिये खड़ा है, उपयोग सहित बैरी देवताके पुरको विदारे उस वख्त पुरेन्द्र कहिये : देवेन्द्र देवताकी सभा में बैठा हुवा उपयोग सहित न्याय (इन्साफ) करे उस वख्त देवेन्द्र माने : शचीपति इन्द्रा-

खेंचे अने दुजीने हाथसे छोड दाले तो भी कार्य सिद्ध थाय नहीं। इण दृष्टांते चनी दोय नय मांही कोण्ही ठिकाणे निश्चय नयकी मुख्यता कीजे अने व्यवहार नयकी गुणता कीजे।

अने किणही टीकाणे व्यवहार नय की मुख्यता कीजे अने निश्चय नयकी गुणता किजे तो सम्यक प्रकाश थाय अने एक नय माने दोजी न माने तथा एकसाथ दोनु खेंचे वा एकसाथ दोनु ढीली छोडे तो सम्यक-रुप मोक्ष कार्य सिद्ध ना हुवे. इसलिए शुद्ध सम्यगदर्शन ने सदे नय प्रमाण कहीजे।

इसपर एक अंधे पांगलेका दृष्टांत. जैसे-- अंधेके कंधेपर पांगलो बैठे पांगलो बतावे अंधो चले दोनु जिन्या नगर पोहचे. इसी तरह निश्चय और व्यवहार नय दोनोंको साथ सच्चा कार्य सिद्ध होवे।

नगरमें रहते हो? में पुन्डलीपुर नगरमें रहता हूं; पुन्डलीपुरमें तो पाड़ा बहुत है तुम किस पाड़ेमें रहते हो? तब बोल्योके देवदत्त ब्राह्मण के पाड़ेमें रहता हूं; देवदत्त ब्राह्मणके पाड़ामें तो घर बहुत हे तुम किस घरमें रहते हो? तब वो बोल्यो के म्हारा निज आवास घरमें रहता हूं: यहां तक तो नैगम नय और व्यवहार नय वाले को मत। अब संग्रह नयवालो कहे के निज आवास घरमें तो बहुत जगह है तब वो कहे के म्हारा साथिया (विस्तरा) प्रमाणे रहता हूं (सोता हूं) अब ऋजुसूत्र नय वालो कहे के ऐसा मत कहो. कहो कि मेरी आत्मा ने आकाश प्रदेश अवगाहिया इतनोही जगह में रहता हूं: अब शब्दादिक तीन नय

(शब्द नय. समभिरूढ नय. एवंभूत नय) वाला कहे कि ऐसा मत कहो. क्योंकि आत्मा जीव है और अजीव है. जीव तो सुक्ष्म निगोद

बहुलतर विशुद्ध नैगम नय है; वले प्रश्नकर्त्ता प्रश्न किया कि एक मोहल्लामें अनेक घर है, तो आप कौनसे घरमें वसते हैं? व्यक्ति उत्तर दिया कि मैं मध्य घर (बीचघर) में वसता हूं; यह विशुद्ध नय है यह सर्व उत्तरोत्तर शुद्ध-रूप नैगम नयके ही वचन है, वले प्रश्न-कर्त्ता प्रश्न किया कि मध्य घरमें तो महान् स्थान है आप कौनसे स्थानमें वसते हैं? व्यक्ति उत्तर दिया कि मैं स्व-शय्यामें वसता हूं, यह संग्रह नय है; वले प्रश्नकर्त्ता प्रश्न किया कि शय्यामें भी महान् स्थान है आप कहां पर रहते हैं? व्यक्ति उत्तर दिया कि असंख्याता प्रदेश अवगाह-रूप में वसता हूं, यह व्यवहार नय है; वले प्रश्नकर्त्ता प्रश्न किया कि असंख्याता प्रदेश अवगाह-रुपमें धर्म, अधर्म आकाश पुद्गल इनके भी महान् प्रदेश है, आप क्या सर्वमें ही

शुद्ध करना, जिस तरह मैं बतला हूं यह कहूं हूं सबका वचन है।

॥ दृष्टान्त दूजो पापको ऊपर ॥

कोई पुरुष हाथमें कलमी (किताब) लेकर जा रहा था, किसीने पूछा, भाई कहां जाते हो? उसने कहा पापको काटने को: तब पापकर्म कटता या तब किसीने पूछा भाई क्या काटते हो? तब उसने कहा पापको । [illegible] [illegible] [illegible] तब यह [illegible] [illegible] तब किसीने पूछा, क्या करते हो? [illegible] के पापको तब [illegible] [illegible] [illegible] तब किसीने पूछा के [illegible] है? उसने कहा पापको: [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कहे के तब उसमें तप [illegible] [illegible] पापको कहे [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कहे के तब उसने [illegible] [illegible] [illegible] किसीने [illegible] [illegible] पापको कहे [illegible]।

हवे शब्द नय आदि (शब्दनय, संभिरूढ एवंभूत नय) तीन नयवाले कहे के जब उसमें धान भरके उपयोग सहित गिनोगे तबही पायली कही जायगी।

॥ दृष्टांत तीजो सामायिक ऊपर ॥

सामायिक शब्दों पर सात नयको वर्णन।

(१) नैगमनयके मनमें सामायिक करनेके जब परिणाम हुवे तबही सामायिक माने।

(२) संग्रहनयके मनमें सामायिकका उपकरण लेकर स्थान प्रतिलेखन जब किया गया तबही सामायिक माने।

(३) व्यवहारनयके मनमें सावध (सावज्ज) जोगका जब परित्याग (पचखान) किया तबही सामायिक माने।

(४ ऋजुसूत्रनयके मनमें जब मन, वचन, कायाके जोग शुभ वर्तन लगे तबही सामायिक माने।

(५) शब्दनयके मतमें जब जीवको वा अजीवको सम्यक प्रकारसे जाण लिया फिर अजीवसे ममत्व भावको दूर कर दिया तब ही सामायिक माने ।

(६) समभिरूढ़नयके मतमें शुद्ध आत्माका नामही सामायिक हैं, (केवल ज्ञानने सामायिक माने) ।

(७) एवंभूतनयके मतमें शुद्ध-आत्मा शुद्ध-उपयोग युक्त सामायिक वाला होता है, ऐसा माने ।

॥ पाठान्तर ॥

॥ सामायिक पर सात नय ॥

(१) नैगमनय वालो सामायिक करनेका परणाम होनेसे सामायिक मानें ।

(२) संग्रह नयवालो सामायिकका उपकरण से सामायिक माने ।

(२) संग्रहनय वालो बाण फेंकने वालेको दोष निकाले।

(३) व्यवहारनय वालो ग्रह-गोचरका दोष निकाले।

(४) ऋजुसूत्रनय वालो आपना कर्मका दोष निकाले।

(५) शब्दनय वालो आपना जीव दुःख दुःख बांध्या इस वास्ते जीवका दोष निकाले।

(६) समभिरूढ़ नय वालो भवितव्यता (ज्ञानीने ऐसाज भाव देख्या था) ऐसा माने।

(७) एवंभूतनय वालो जीवने तो सुख दुःख है नहीं जीव सदा सुखी सच्चिदानन्द निर्मल आत्मा है ऐसा माने।

॥ दृष्टान्त छठो राजा ऊपर ॥

(१) नैगमनय वालो हाथ पगमें शुभ लक्षण वा गुण देख्या इसोने राजा माने।

दिया है ॥४॥ और शब्दनयके मतसे जो तीन कालमें शुद्ध उपयोग-पूर्वक है वही जीव है; अपितु (इसलिये) सम्यक्त मोहनी-कर्मकी वर्गना इस नयने शुद्ध उपयोग अर्थ ग्रहण कर लिया ॥५॥ समभिरूढ़नयके मतसे जिसकी शुद्ध-रूप सत्ता है और स्व-गुणमें ही मग्न है; क्षायक सम्यक्त पूर्वक जिसने आत्माको जान लिया है उसका नाम जीव है, इस नयके मतमें कर्म संयुक्त ही जीव है ॥६॥ एवंभूतनयके मतसे शुद्ध-आत्मा, केवल-ज्ञान, केवल-दर्शन-संयुक्त, सर्वथा कर्म रहित, अजर-अमर, सिद्ध-बुद्ध, पारगत इत्यादि नाम-युक्त सिद्ध आत्माको ही जीव माना है ॥७॥ इस प्रकार सातनय जीव को माना है ।

॥ दृष्टान्त आठमो सिद्ध ऊपर ॥

सिद्ध शब्दका वर्णन---नैगम नयके मतमें

कर्मोको दूर कर दिया है. केवल-ज्ञान केवल-दर्शन संयुक्त लोकाग्र में विराज मान हैं. ऐसे सिद्ध-आत्माको ही सिद्ध माना गया है. क्योंकि सकल कार्य उसीका ही आत्माके सिद्ध है ॥७॥

इत्यादिक सर्व पदार्थ ७ नयकरी प्रमाण कीजै ।

ए ७ नय माने ते सम्यदृष्टि। एक नय माने और छव नय न माने. दोय नय माने और पांचनय न माने. ऐसे जावत छव नय माने और एक नय न माने ते मिथ्या दृष्टि।

लाल, पन्नालाल, हीरालाल मोतीलाल, फूसाराम, धूलीराम : बाईजातमें, केसरबाई कस्तुरीबाई इत्यादि ।

(३) अर्थ-शून्य नाम उसको कहिये जिसका अर्थ न होय जैसे--छींक, उबासी, खांसी, हांसी, गाय की रम्भावना वाजिंत्रको शब्द वगैरे इसका कुछ अर्थ नहीं होता है ॥

(२) स्थापना निक्षेपका दोय भेद (१) सद्भाव स्थापना (२) असद्भाव स्थापना ।

(१) सद्भाव स्थापना किसको कहिये ? सरीखी मूर्ति, सरीखो आकार (च्यार भूजाकी मूर्त्ति च्यार भूजाको आकार) पोठीयाकी मूर्ति और पोठीयाको आकार ।

(२) असद्भाव स्थापना किसको कहिये ? कोई गोलमटोल पत्थर लेकर उसका सिन्दुर तबक, मालीपाना लगाकर कहे कि ये म्हाग भैरुजी है, अथवा कोई पांच पचेटा (पांचोका)

ओर ये ही घीस यहू जीव आश्री एवं चालीस हुया जेसे कि सद्भाव स्थापना एक जीव आश्री १० बहू जीव आश्री १० ए घीस असद्भाव स्थापना ; एक जीव आश्री १० बहू जीव आश्री १० ए घीस ; एवं ४० प्रकारकी स्थापना ।

(३) द्रव्य निक्षेपाका दोय भेद (१) आगम (२) नो आगम ।

आगम केहता:---शब्दादिक का अर्थ उपयोग रहित शून्य-चित्त से करे, शास्त्र भणे पण अर्थ न समझे ।

नोआगमरा तीन भेद (१) जाणग शरीर (२) भव्य शरीर (३) जाणग भव्यव्यतिरिक्त शरीर ।

जाणगशरीर केहता--कोई एक श्रावक आवश्यक प्रतिक्रमणका जाण काल प्राप्त हुयो उसका शरीरको देखके कहे के आ श्रावक आवश्यक जानता था, आवश्यक करता था

लोकोत्तर—जेइमें (जे लोकोमें) समण गुण मुक्ता, (जे साधु गुण रहित जोग)।

छकाय निराणुकंपा—छव कायकी दया रहित।

हयाइव उदंमा—घोड़े जैसा उन्मत्त (तोफानी)।

गयाइव निरंकुश—हाथी जैसा निरंकुशी याने अंकुश रहित।

घट्टा—शरीरकी सुश्रपा करे।

मठा (मठालंची) तिपुठा— तप-रहित।

पाडुरपट पउरणा---स्वच्छ वस्त्रके धारी।

जिणाणं---आणा आण रहित. जिण आज्ञा विराधिक भगवानकी आज्ञा रहित।

उभय कालं आवसग टावंति---दोनों वक्त प्रतिक्रमण करे।

ए लोकोत्तर द्रव्य आवसग है उसको लोकोत्तर द्रव्य आवसक कहीजे।

२) लोकोत्तर (३) कुपरावचन ३

लोकिक कहता---जो कोई रायवां, तलवर, गाडंबी, कोड़वी, इब्रसेठो सेनापति सवेरे तो उपयोग सहित भारत और शामको रामायण, सांभले, उसको लोकिक भाव आवसक कहते हैं।

लोकोत्तर कहता--जो कोई साधु, साधवी, श्रावक, श्राविका, तहमने, तहचित्त, तहलेशाय, तहभुसिर्व (अध्यवसाय) दोय वखत आवसक प्रतिक्रमण (आवसक टर्वना) शुद्ध उपयोग सहित करे, उसको लोकोत्तर भाव आवस्सक कहते हैं।

कुपत पवन कहता---कोई चरकचिरिया, चरमखंडिया, पांडुरगा, पासदंता मंदरमें उठ कर स्नान करे, धूप-दीप करे, निलक छापा करे और ओंकार शुद्ध उपयोग सहित पोदस फरके भोजन करे उसको कुपरावचन भाव आवसक कहते हैं ।

यह ४ चार निक्षेपा नव तत्व ऊपर उतारते हैं ।

॥ १ जीव-तत्व ॥

(१) नाम निक्षेपे--जीव ऐसा नाम, सो नाम निक्षेपो, अजीवका नाम जीव रखे तो भी नाम निक्षेपाके अनुसारसे उसे जीव ही माना जाय ।

(२) स्थापना निक्षेपे---चित्राम प्रमुखकी स्थापना करे सो स्थापना निक्षेपो ।

(३) द्रव्य निक्षेपे---षट द्रव्यमेंसे जो जीव द्रव्य असंख्यात प्रदेशवंत है सो द्रव्य निक्षेपो ।

(४) भाव निक्षेपे--(१) उदय, (२) उपशम, (३) क्षायक, (४) क्षयोपशम, (५) प्रणामिक ।

इन ५ भावमें प्रवर्त्ते सो भाव निक्षेपो इन पांच भाव निक्षेपेकी ५३ प्रकृति।

(१) उदय भावकी २१ प्रकृति---

गति ४, लेश्या ६, कषाय ४, वेद ३, असिद्ध १, अज्ञाणी १, अवृति १, मिथ्यात्वी १, यह २१ प्रकृति।

(२) उपसम भावकी २ प्रकृति---

उपशमसम्यक्त और उपशमचारित्र ये दोय।

(३) क्षायककी ६ प्रकृति---

दानांतराय आदि पांच अंतरायका क्षय ५, केवल ज्ञान १, केवल दर्शन १, क्षायक सम्यक्त १, क्षायिकचारित्र १, यह नव।

(४) क्षयोपशमकी १८ प्रकृति---

ज्ञान ४ पहला, अज्ञान ३, दर्शन ३ पहला, अंतराय ५, और क्षयोपशमचारित्र १, क्षयोपशमसमकित १, संयमासंयम १, यह अठारह प्रकृति।

५, गंध २, रस ५, और स्पर्श ८, यह ३० भेद।

(२) उपशम भावके २ भेद---

उपशम और उपशमनिष्पन्न।

उपशम--८ कर्मोंका ढके हुये को जाणना।

उपशमनिष्पन्न के ११ भेद—

कषाय ४, रागद्वेष १, दर्शनमोह १, चारित्रमोह १, दर्शनलब्धि १, चारित्र लब्धि १, छद्मस्थ १ और वीतरागी १, यह ११ भेद।

(३) क्षायक भावके २ भेद---

क्षय और क्षयनिष्पन्न।

(१) क्षय—आठ कर्मोंका क्षय।

(२) क्षय निष्पन्नके ३७ भेद---

ज्ञानावरणी ५, दर्शनावरणी ६, वेदनी २, मोहनी ८ (क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, दर्शनमोह, चारित्रमोह), ४ गतिका आयुष्य, नाम २, गोत्र २, अंतराय ५, यह

सो भावनिक्षेपो।

॥ ४ पाप तत्व ॥

(१) नाम निक्षेपेसे पाप ऐसा नाम सो नाम निक्षेपो (२) स्थापना निक्षेपेसे अक्षरादि स्थापके बतावे सो स्थापना निक्षेपो, (३) द्रव्य निक्षेपेसे अशुभ कर्मकी वर्गणा द्रव्यपणे प्रगमें सो द्रव्य निक्षेपो, (४) भाव निक्षेपेसे पापके उदयसे जीव दुःख वेदे सो भाव निक्षेपो।

॥ ५ आश्रव तत्व ॥

(१) नाम निक्षेपेसे आश्रव ऐसा नाम सो नाम निक्षेपो, (२) स्थापना निक्षेपेसे अक्षरादि स्थापना सो स्थापना निक्षेपो (३) द्रव्य निक्षेपेसे मिथ्यात्वादि प्रकृति तथा नाम और मोह कर्मकी प्रकृति आत्मके साथ लोली· भूत हो कर कर्म शक्ति सहित पुद्गल ग्रहण

खिरे सो, (४) भाव निक्षेपसे आत्मा निर्मल हो कर ज्ञान लब्धी क्षयोपशम लब्धी, क्षायक लब्धी इत्यादि लब्धी प्रगटे सो भाव निक्षेपा ।

॥ ८ बंध तत्व ॥

(१-२) नाम और स्थापना पूर्ववत्, (३) द्रव्य निक्षेपसे कर्म वर्गणाके पुद्गल आत्मप्रदेशसे बंधे सो, (४) भाव निक्षेपसे मद्यपान जैसी, बंधकी छाक चड़े सो भाव निक्षेपो ।

॥ ९ मोक्ष तत्व ॥

(१-२) नाम और स्थापना पूर्ववत्; (३) द्रव्य निक्षेपसे जीवका निर्मल पणा, (४) भाव निक्षेपसे आत्माके निज गुण क्षायिक समकित केवल ज्ञान सो भाव निक्षेपो ।

इति ४ निक्षेपा ९ तत्व ऊपर उतारया सो समाप्त ।

क्षेत्र केहता—लोक अकाश प्रदेश।

काल केहता—समय आवलकादिक जाव पुद्गल परावर्तन सुधी।

भाव का तीन भेद—

(१) स्वभाव (२) गुण (३) पर्याय, स्वभाव तो वस्तुको स्वभाव, गुण जाण पणो, पर्याय पलटे।

॥ पांचमो द्रव्य ने भाव ॥

द्रव्यथी जीव शाश्वतो छे।

भावथी जीव अशाश्वतो छे. जैसे किसी भमरे ने काष्ट कोर्यु ते कोरनीमें कको [क] कोराणो पण भमरो नहीं जाणेके में कको [क] कोर्यु, स्वभावे कको [क] कोराणो, कोई पंडित पुरुष आवी कको [क] देख्यो और कके [क]

क्षेत्र केहता—लोक अकाश प्रदेश।

काल केहता—समय आवलकादिक जाव पुद्गल परावर्तन सुधी।

भाव का तीन भेद—

(१) स्वभाव (२) गुण (३) पर्याय, स्वभाव तो वस्तुको स्वभाव, गुण जाण पणो, पर्याय पलटे।

॥ पांचमो द्रव्य ने भाव ॥

द्रव्यथी जीव शाश्वतो छे।

भावथी जीव अशाश्वतो छे. जैसे किसी भमरे ने काष्ट कोर्यु ते कोरनीमें ककोे [क] कोराणो पण भमरो नहीं जाणेके में ककोे [क] कोर्यु, स्वभावे ककोे [क] कोराणो, कोई पंडित पुरुष आवी ककोे [क] देख्यो और कके [क]

(२) अनुमान प्रमाणसे---श्रच्छी संपदा, वल, रूप, जाती ऐश्वर्यकी उत्तमता देख अनुमानसे जाणेकी यह पुण्यवंत है, जैसे सुवाहू कुंवरकी संपदा देख गौतम स्वामी प्रमुख साधुजोने जाण्या की यह पुण्यवंत जीव है यह अनुमान प्रमाण।

(३) ओपमा प्रमाणसे---पुण्यवंतको पुण्यवंतकी ओपमा देवे. जैसे---देवोदुगंदगोजहा अर्थात् पुण्यवंत जीव दुगंदक इन्द्रके गुरु स्थानीय देव जैसा सुख भोगता है. तथा चन्द्राइयतराणं भरतोइय मणुष्याणां अर्थात्. जैसे तारके समूहमें चन्द्रमा शोभता है तैसे मनुष्योंके वृन्दमें भरतनामा महाराजा शोभते हैं इत्यादि ओपमा प्रमाण जाणना।

(४) आगम प्रमाणसे---शुभ प्रकृति और शुभ योगसे पुण्य बंध होता है शास्त्रमें कहा है

सोलहमो मुक्ताने गमंता (मुख्य गौण)।

मुक्ता कहता—कोयल काली.
गमंता कहता—वर्ण पावे पांच।
मुक्ता कहता—सुओ हरो।
गमंता कहता—वर्ण पावे पांच।
मुक्ता कहता—जीव अज्ञानो।
गमंता कहता—जीव ज्ञानो।
मुक्ता कहता—सन्यापति।
गमंता कहता—सन्या।

मुक्ता लोकमें दीसती हुई वस्तु और गमंता उसी वस्तुको निज स्वरूप जैसे मुक्ताले पुगलो धोलो गमंताले वर्ण पांच।

पण अंतरथी तेना गुण वधारवा माटे भलुं चहाय छे।

॥ चोथो स्वभाव धर्म कहे छे ॥

ते जे वस्तु जीव अथवा अजीव तेनी जे प्रणित छे तेना वे भेद:---

तेमां एक शुद्ध स्वभावथी अने बीजो कर्मना संयोगथी अशुद्ध प्रणती छे ते जीवने विषय कषायना संयोगथी विभावना थाय छे, हवे जीव अने पुद्गलने विभाव छे तेने दूर करीने जीव अपणा ज्ञानादिक गुणमां रमण करे ते स्वभाव धर्म अने पुद्गलनो एक वर्ण, एक गंध, एक रस वे फरसमां रमण थाय ते। पुद्गलनो शुद्ध स्वभाव धर्म जाणवो। ए सिवाय बीजां चार द्रव्यमां स्वभाव धर्म छे पण विभाव धर्म नथी ते, चलण गुण, स्थिर गुण, अवकाश गुण, वर्तना गुण ते, पोतपोताना स्वभावेने छोडता नथी ते, माटे शुद्ध स्वभाव धर्म छे, ए चार

कलकत्ते में विक्रम सम्वत् १९७८ मगसर सुदी १३ मङ्गलवार तारीख १३ दिसम्बर सन् १९२१ ई० को लिख्यो ।

❀ इति श्री नय निक्षेप प्रमाणको थोकड़ो समाप्त ❀

॥ सेवं भंते सेवं भंते तेमव सच्चम् ॥

तेजु लेश्या, पद्म लेश्या, शुक्ल लेश्या ए तीन लेश्यारी सुगंध प्रशस्त, नामे-भली-जैसे फुलरी सुगंध निकले इणसे घणी अधिक सुगंध जाणनी ।

---

(४) चौथो रस द्वार ।

कृष्ण लेश्यारो रस---जैसा कड़वे तुम्बेरो रस, जैसा नीमड़ा रो रस, जैसा कटुक रो रस, जैसो रहीणी नामे वनस्पति रो रस, इनसे घणो अधिक कड़वो ।

नील लेश्या रो रस---जैसो सुंठ, पींपल, काली मीर्च, गज पीपलरो रस, इनसे घणो अधिक तीखो ।

कापोत लेश्यारो रस---जैसी काची केरी रो रस, काचे कोठरो रस इनसे घणो अधिक खाटो रस ।

नहीं राखे, छव कायारी हिंसा करे, आरंभ रे विपे तिव्र प्रणाम हुवै, द्रोही, पापरे विपै साहसिक निधंस प्रणामी, सुग रहित, अजितेन्द्री इसा योग प्रवर्ते सो कृष्ण लेश्या रा लक्षण जाणना।

नील लेश्यारा लक्षण—इर्षा करे अमर्षा आणे, अतपस्वी, मायावियो, तपस्या करे सो सुहावे नहीं, पाप करतो लाजे नहीं, गिरधी, द्वेषी, धूर्त, प्रमादी, रसरो लोलूपी, मायागवेपी, आरंभरो अव्रती, द्रोही, पापरे विपे साहसिक ऐसा जोग प्रवर्ते सो नील लेश्या रा लक्षण जाणना।

कापोत लेश्यारा लक्षण—वांको वहे (वांको चले) निवढ माया करे, सरलपणा रहित मिथ्यात्वी, अनार्य दुष्ट वचन बोले. मच्छर भाव आणे इसा जोग प्रवर्ते सो कापोत लेश्या रा लक्षण जाणना।

णरा घणा, छठी नारकीमें लेश्या पावे एक
ण, सातमी नारकी में लेश्या एक महा
णा।

१० भवनपतिमें लेश्या पावे ४ (कृष्ण,
त, तेजु, कापोत)।

पृथ्वी कायरे पर्यापतामें लेश्या पावे ३
लड़ी।

पृथ्वी कायरे अपर्यापतामें लेश्या पावे ४
लड़ी।

अपकायरे पर्यापतामें लेश्या पावे ३ पेहलड़ी।

अपकायरे अपर्यापतामें लेश्या पावे ४
लड़ी।

वनस्पति कायरे पर्यापतामें लेश्या पावे ३
लड़ी।

वनस्पति कायरे अपर्यापतामें लेश्या पावे
हलड़ी।

सत्य शास्त्र के श्रवण से,
चीन्हें धर्म सुजान ।
कुमति दूर ह्वै ज्ञान हो,
मुक्ति ज्ञान से मान ॥३॥

सच्चे शास्त्र के सुनने से बुद्धिमान् जन धर्म को अच्छी तरह पहिचानते हैं, शास्त्र के श्रवण से खराब बुद्धि दूर होकर ज्ञान होता है और ज्ञान से मुक्ति अर्थात् अक्षय सुख मिलता है ॥३॥

नहिं होवै जिस शास्त्र से,
धर्म प्रीति वैराग ।
निकमा श्रम तहँ क्यों करो,
वृथा लवै ज्यों काग ॥४॥

जिस शास्त्र के सुनने से न तो वैराग्य हो और न धर्म में ही प्रीति हो, ऐसे शास्त्र में व्यर्थ परिश्रम नहीं करना चाहिये, क्योंकि उस का पढ़ना काकभाषा के समान है ॥४॥

चरण एक वा अर्द्ध पद,
नित्य सुभाषित सीख ।
मूरख हू पण्डित हुवै,
नदियन सागरै दीख ॥५॥

एक पद अथवा आधा पद भी प्रतिदिन सुभाषित का सीखने